Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

कक्षा - 12

भारतीय इतिहास के कुछ विषय

अध्याय - 6

भक्ति-सूफी परंपराएँ

भाग - 6

प्रीतेश जोशी



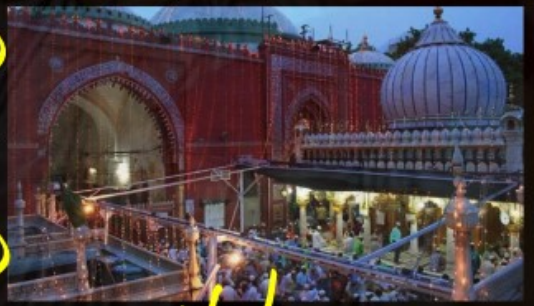
Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

आश्रम

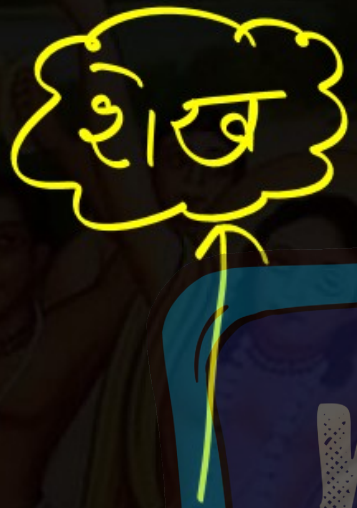
चिश्ती ख़ानक़ाह में जीवन

- ख़ानक़ाह सामाजिक जीवन का केंद्र बिंदु था।
- शेख़ निज़ामुद्दीन औलिया (चौदहवीं शताब्दी) का ख़ानक़ाह दिल्ली शहर की बाहरी सीमा पर यमुना नदी के किनारे ग़ियासपुर में था।



Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



- यहाँ कई छोटे-छोटे कमरे और एक बड़ा हाल (जमातख़ाना) था जहाँ सहवासी और अतिथि रहते, और उपासना करते थे।
- सहवासियों में शेख का अपना परिवार, सेवक और अनुयायी थे।
- शेख एक छोटे कमरे में छत पर रहते थे जहाँ वह मेहमानों से सुबह-शाम मिला करते थे।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

पीर → गुरु

- एक बार मंगोल आक्रमण के समय पड़ोसी क्षेत्र के लोगों ने ख़ानक़ाह में शरण ली।
- यहाँ एक सामुदायिक रसोई (लंगर) फुतूह (बिना माँगी खैरात) पर चलती थी।
- सुबह से देर रात तक सब तबके के लोग—सिपाही, गुलाम, सामक, व्यापारी, कवि, राहगीर, धनी और निर्धन, हिंदू जोगी और कलंदर यहाँ अनुयायी बनने, इबादत करने, ताबीज़ लेने अथवा विभिन्न मसलों पर शेख की मध्यस्थता के लिए आते थे।

लंगर

फ़त्वा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

- कुछ अन्य मिलने वालों में अमीर हसन सिजज़ी और अमीर खुसरो जैसे कवि तथा दरबारी इतिहासकार ज़ियाउद्दीन बेरनी जैसे लोग शामिल थे।
- इन सभी लोगों ने शेख के बारे में लिखा।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

Q. शेरव का खानकाह मध्यकालीन भारत में किन गतिविधियों का केन्द्र?



Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

इस्लामी

सूफ़ी संतों के द्वारा स्थानीय परंपराओं को आत्मसात करने का प्रयत्न किया गया जैसे

1. शेख के सामने झुकना → आदर
2. मिलने वालों को पानी पिलाना
3. दीक्षितों के सर का मुंडन
4. यौगिक व्यायाम आदि व्यवहार इस तथ्य के द्योतक।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

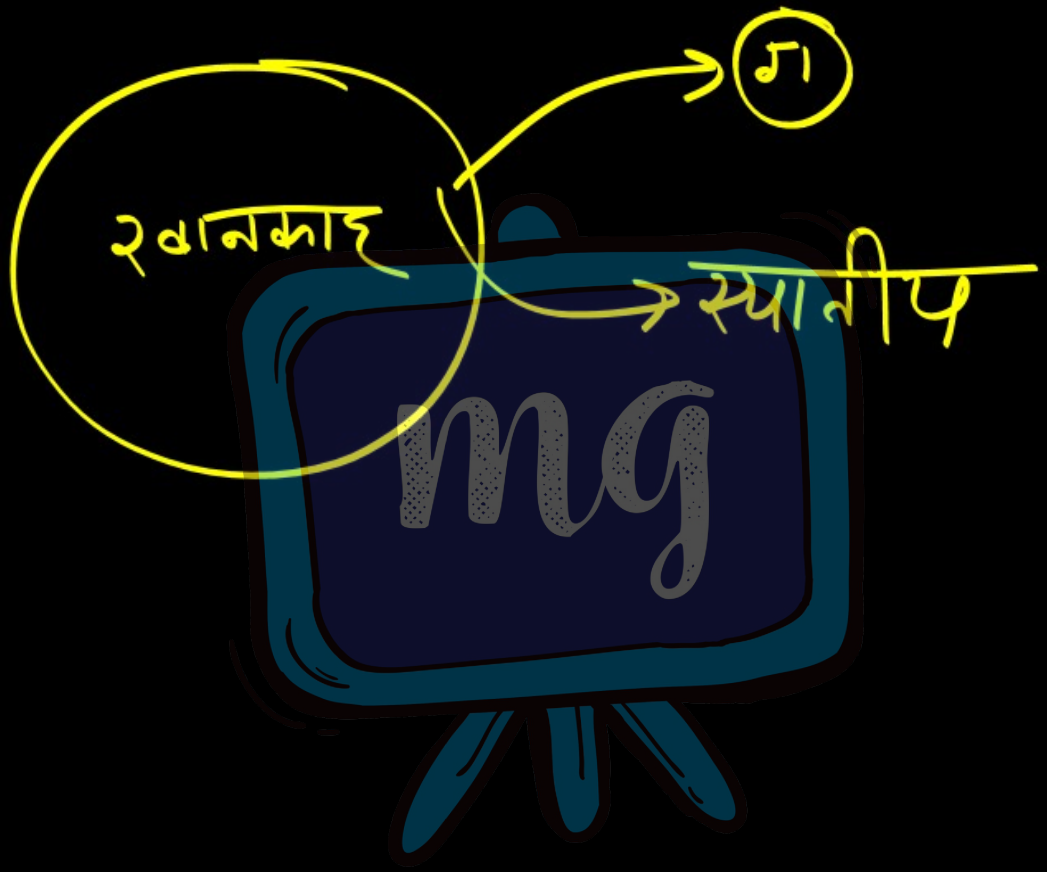
missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



- शेख निज़ामुद्दीन ने कई आध्यात्मिक वारिसों का चुनाव किया और उन्हें उपमहाद्वीप के विभिन्न भागों में ख़ानक़ाह स्थापित करने के लिए नियुक्त किया।
- इस वजह से चिश्तियों के उपदेश, व्यवहार और संस्थाएँ तथा शेख का यश चारों ओर फैल गया।
- उनकी तथा उनके आध्यात्मिक पूर्वजों की दरगाह पर अनेक तीर्थयात्री आने लगे।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

Q. चिश्ती संप्रदाय में उपासना करने के तरीकों पर चर्चा करें?



Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

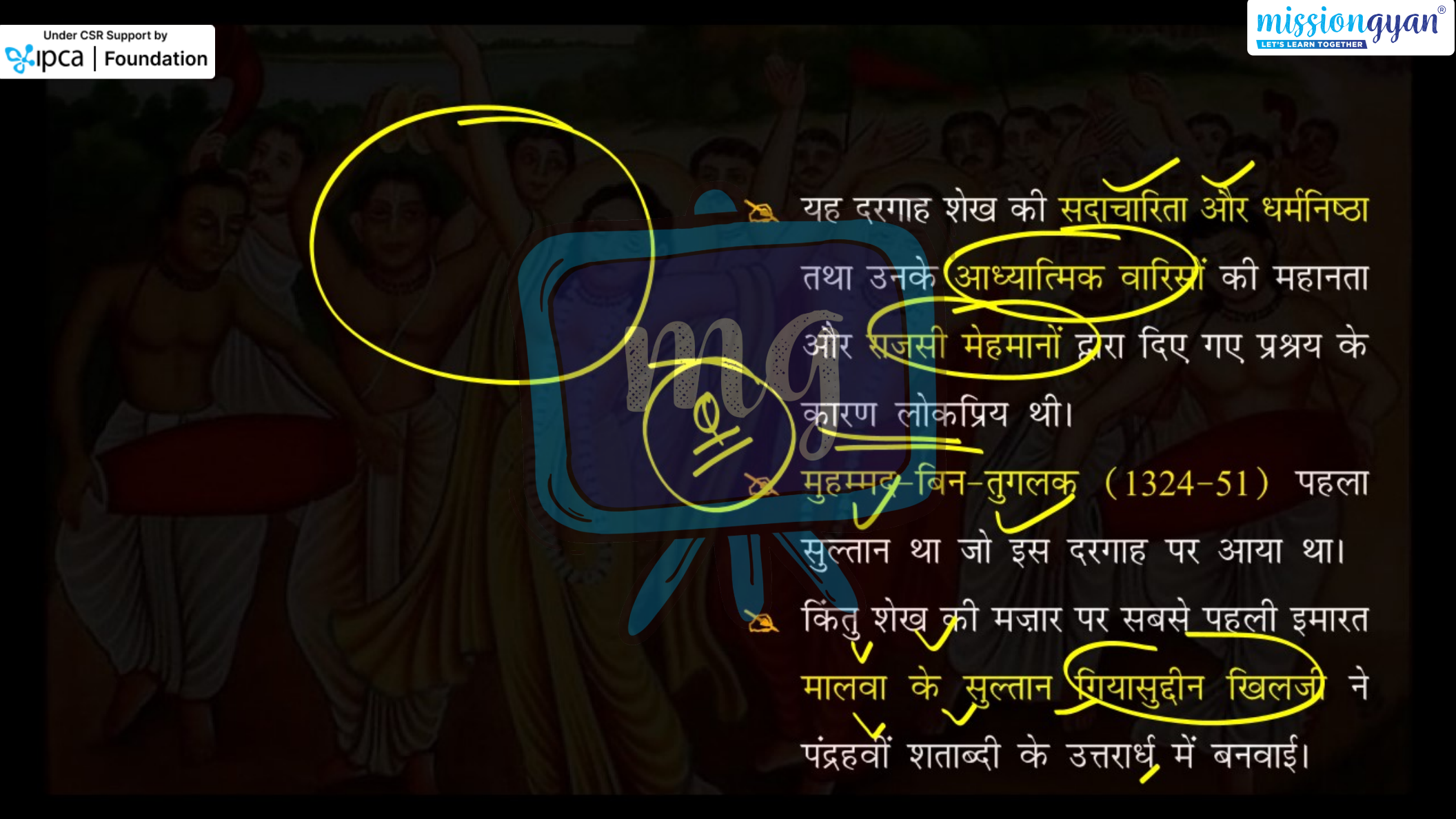
चिश्ती उपासना : ज़ियारत और कव्वाली

अलग-अलग संप्रदायों, वर्गों और समुदायों के लोग महान् चिश्ती संतों की दरगाह पर अपनी आस्था प्रकट करते रहे हैं चिश्तियों में सबसे अधिक पूजनीय दरगाह ख़्वाजा मुइनुद्दीन चिश्ती (अजमेर) की है जिन्हें 'ग़रीब नवाज़' कहा जाता है।



Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



- यह दरगाह शेख की सदाचारिता और धर्मनिष्ठा तथा उनके आध्यात्मिक वारिसों की महानता और सज्जन मेहमानों द्वारा दिए गए प्रश्रय के कारण लोकप्रिय थी।
- मुहम्मद-बिन-तुगलक (1324–51) पहला सुल्तान था जो इस दरगाह पर आया था।
- किंतु शेख की मज़ार पर सबसे पहली इमारत मालवा के सुल्तान गियासुद्दीन खिलजी ने पंद्रहवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में बनवाई।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- सोलहवीं शताब्दी तक आते-आते अजमेर की यह दरगाह बहुत ही लोकप्रिय हो गई थी।
- इस दरगाह को जाने वाले तीर्थयात्रियों के भजनों ने ही अकबर को यहाँ आने के लिए प्रेरित किया।
- अकबर यहाँ चौदह बार आया कभी तो साल में दो-तीन बार कभी नयी जीत के लिए आशीर्वाद लेने अथवा संकल्प की पूर्ति पर या फिर पुत्रों के जन्म पर।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

अजमेर

उर्स

1568 में अकबर ने तीर्थयात्रियों के लिए खाना पकाने हेतु एक विशाल देग दरगाह को भेंट की। उन्होंने दरगाह के अहाते में एक मस्जिद भी बनवाई।



Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

इस्लाम

संगीत

सूफी

- नाच और संगीत भी ज़ियारत का हिस्सा थे।
- सूफी संत ज़िक्र (ईश्वर का नाम-जाप) या फिर समा (श्रवण करना) यानी आध्यात्मिक संगीत की महफ़िल के द्वारा ईश्वर की उपासना में विश्वास रखते थे।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



भक्ति → ② स्थानीय ↑ भाषा

भ्रमण

लोग

↓

भाषा → भजन

↓

संकलन

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

हिंदी + उर्दू

भाषा और संपर्क

- न केवल समा में चिश्तियों ने स्थानीय भाषा को अपनाया अपितु दिल्ली में चिश्ती सिलसिले के लोग हिंदवी में बातचीत करते थे।
- बाबा फरीद (खानकाह-अजोधन, पंजाब) ने भी क्षेत्रीय भाषा में काव्य रचना की जो गुरु ग्रंथ साहिब में संकलित है।
- मलिक मोहम्मद जायसी का प्रेमाख्यान पद्मावत पद्मिनी और चित्तौड़ के राजा रतनसेन की प्रेम कथा के इर्द-गिर्द घूमता है।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

संत

- अक्सर ख़ानक़ाहों में समा के दौरान ऐसे काव्यों का वाचन होता था।
- कुछ और रचनाएँ लोरीनामा और शादीनामा के रूप में लिखी गईं।
- लिंगायतों द्वारा लिखे गए कन्नड़ के वचन और पंढरपुर के संतों द्वारा लिखे मराठी के अभंगों ने भी उन पर अपना प्रभाव छोड़ा।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

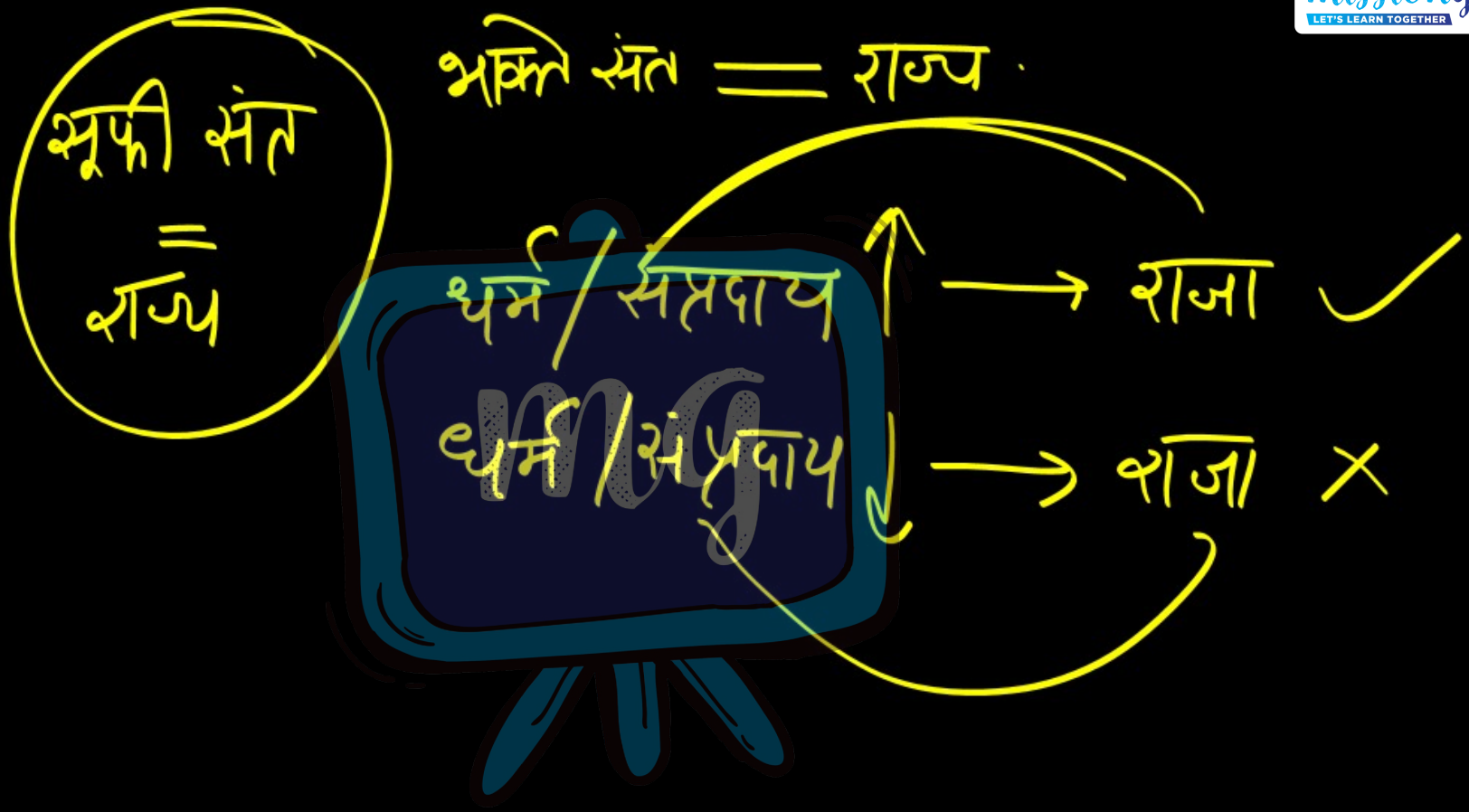
missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

Q. सूफी ने संतो ने किस प्रकार स्थानीय भाषा का सहारा लिया ?



Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

सुल्तान सूफी

तमान

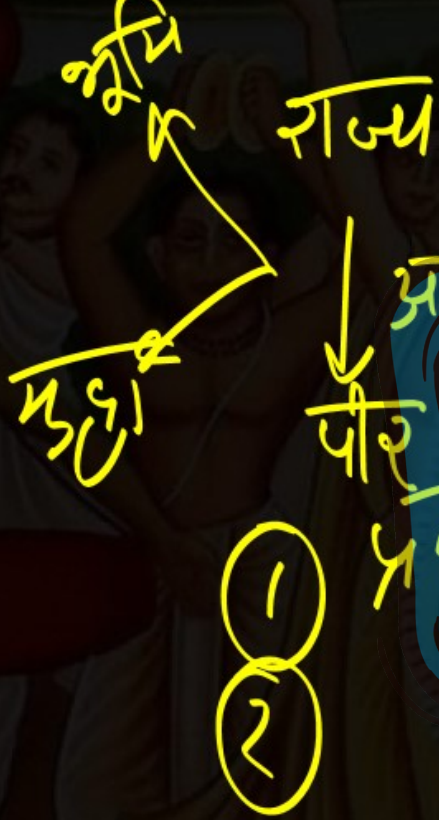
राज्य

सूफी और राज्य

- चिश्ती संप्रदाय की एक और विशेषता संयम और सादगी का जीवन था जिसमें सत्ता से दूर रहने पर बल दिया जाता था।
- सत्ताधारी विशिष्ट वर्ग अगर बिना माँगे अनुदान या भेंट देता था तो सूफी संत उसे स्वीकार करते थे।
- सुल्तानों ने कईबार खानक़ाहों को कर मुक्त (इनाम) भूमि अनुदान में दी।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



- चिश्ती धन और सामान के रूप में दान स्वीकार करते थे किंतु इनको सँजोने के बजाय खाने, कपड़े, रहने की व्यवस्था और अनुष्ठानों जैसे समा की महफिलों पर पूरी तरह खर्च कर देते थे।
- इस तरह शेख के नैतिक अधिकार की पुष्टि होती थी और आम लोगों का उनकी ओर झुकाव बढ़ता था।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- सूफी संतों की धर्मनिष्ठा, विद्वता और लोगों द्वारा उनकी चमत्कारी शक्ति में विश्वास उनकी लोकप्रियता का कारण था।
- इन वजहों से शासक भी उनका समर्थन हासिल करना चाहते थे।
- जब तुर्कों ने दिल्ली सल्तनत की स्थापना की तो उलमा द्वारा शरिया लागू किए जाने की माँग को ठुकरा दिया गया।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

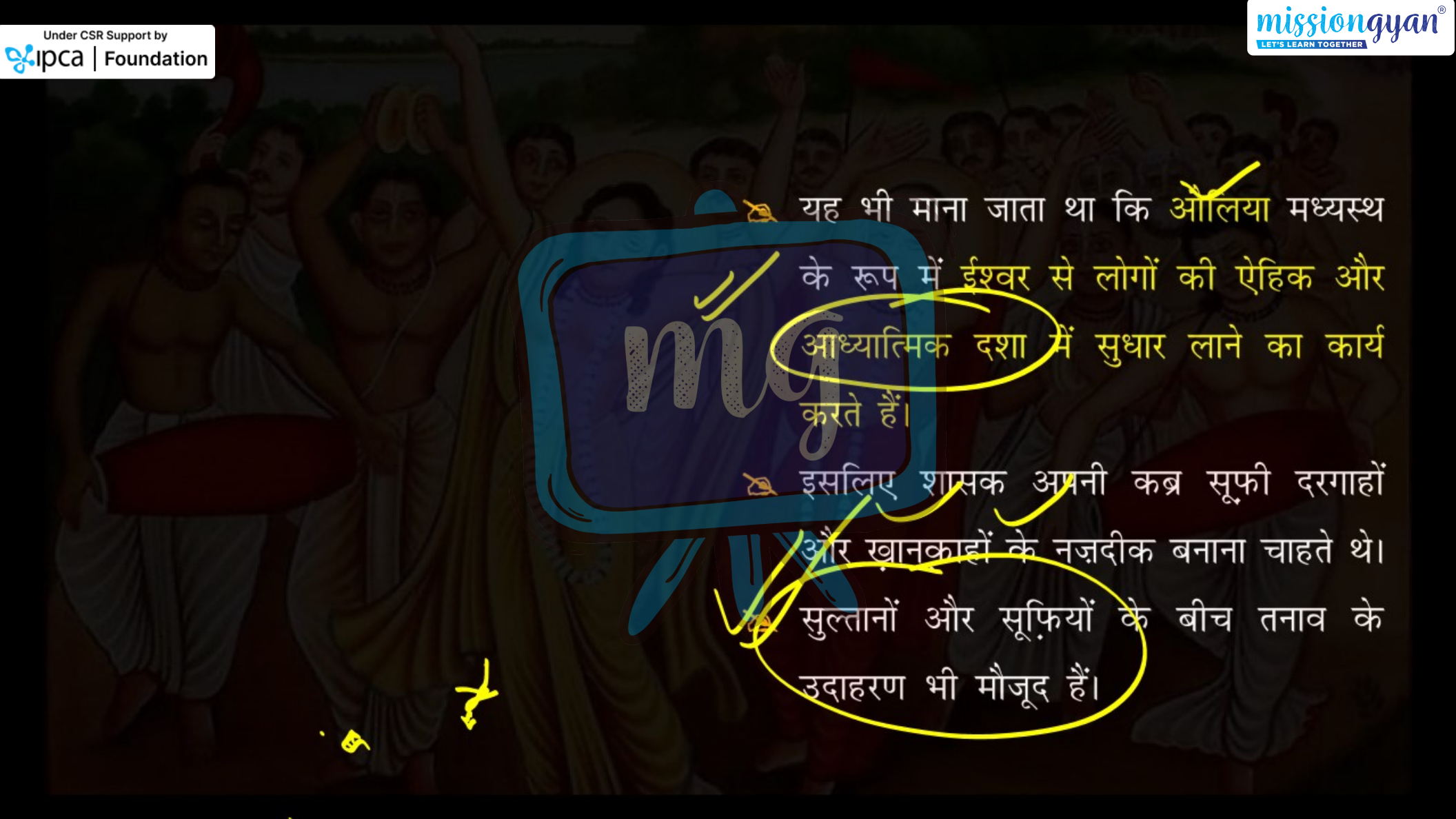
missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

क्योंकि सुल्तान जानते थे कि उनकी अधिकांश प्रजा इस्लाम धर्म मानने वाली नहीं है।

ऐसे समय सुल्तानों ने सूफी संतों का सहारा लिया जो अपनी आध्यात्मिक सत्ता को अल्लाह से उद्भूत मानते थे जो उलमा द्वारा शरिया की व्याख्या पर निर्भर नहीं थे।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

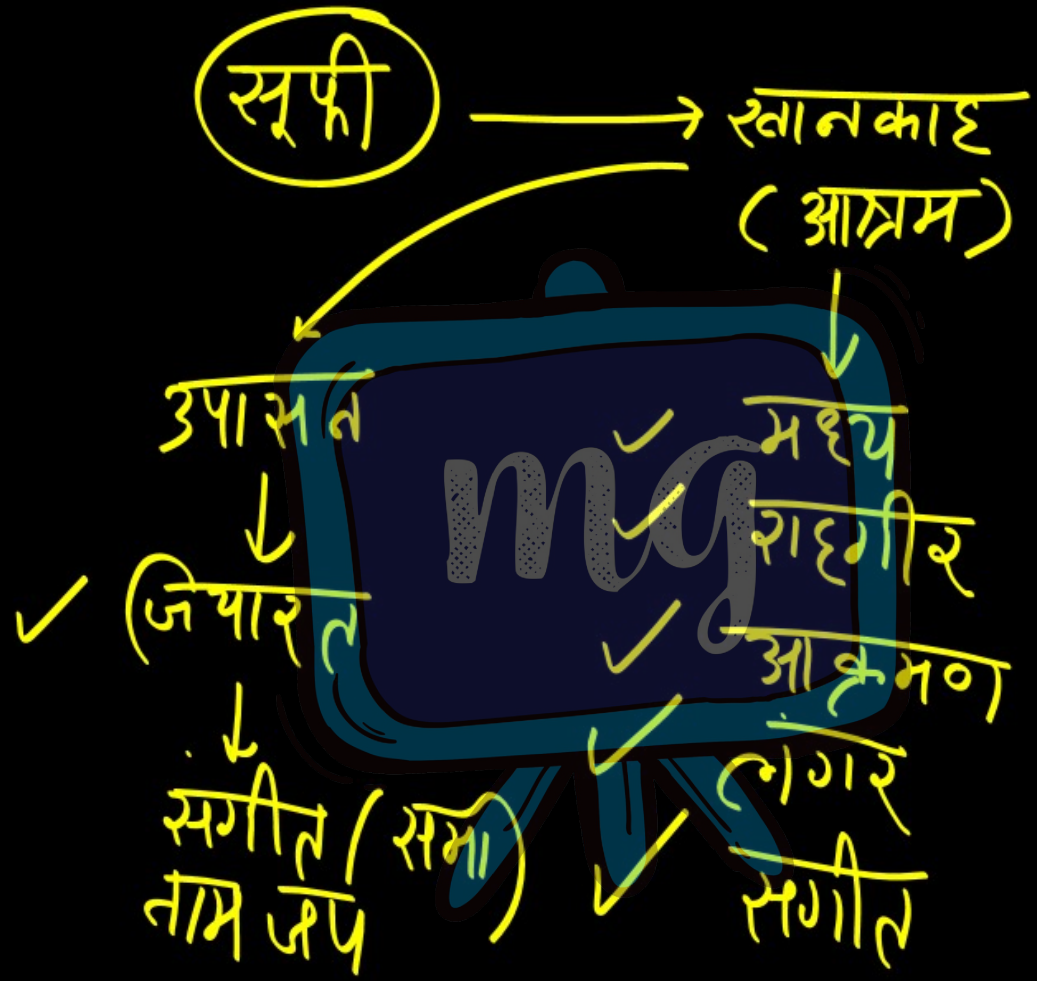
missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



- यह भी माना जाता था कि औलिया मध्यस्थ के रूप में ईश्वर से लोगों की ऐहिक और आध्यात्मिक दशा में सुधार लाने का कार्य करते हैं।
- इसलिए शासक अपनी कब्र सूफी दरगाहों और ख़ानकाहों के नज़दीक बनाना चाहते थे।
- सुल्तानों और सूफ़ियों के बीच तनाव के उदाहरण भी मौजूद हैं।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

२. सूफी संत और राज्य के बीच रिश्ते किस प्रकार थे?



Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

आध्यात्मिक राजनीतिक

- अपनी सत्ता का दावा करने के लिए दोनों ही कुछ आचारों पर बल देते थे जैसे-
  - झुक कर प्रणाम करना ।
  - कदम चूमना ।
- कभी-कभी सूफ़ी शेखों को आडंबरपूर्ण पदवी से संबोधित किया जाता था।
- उदाहरणत - शेख निज़ामुद्दीन औलिया के अनुयायी उन्हें सुल्तान-उल-मशख (अर्थात शेखों में सुल्तान) कह कर संबोधित करते थे।